समवसरण-स्तुति

शोभेसमवसरणसुखकार, प्रभुकासमवसरणसुखकार।टेक॥

अन्तरिक्ष जिनराज विराजे, अपने ही आधार।
मानों कहते हैं हम सबसे, पर-आश्रय दुःखकार॥१॥

प्रभु-चरणों में इन्द्रादिक के, मुकुट झुके अविकार।
मानों दर्शावें हम सबको, जग का विभव असार॥२॥

ढुरते चौंसठ चमर कहत हैं, जिनपद ही है सार।
जो अपने प्रभुवर को झुकते, वे होते भवपार॥३॥

अनन्त चतुष्टय-युत प्रभुवर की, महिमा अपरम्पार।
दर्शावें निज शुद्धातम की, ध्रुव प्रभुता अविकार॥४॥

शुद्धातम ही श्री जिनवर की, दिव्यध्वनि का सार।
अहो ! अनुभवें आनन्दित हों, सहज नमन अविकार॥५॥

मंगल-प्रभात

है ज्ञान-सूर्य का उदय जहाँ, मंगल प्रभात कहलाता है।
मिथ्यात्व महातम हो विनष्ट, सम्यक्त्व कमल विकसाता है॥१॥

वस्तु का रूप यथार्थ दिखे, नहिं इष्ट-अनिष्ट दिखाता है।
है भिन्न चतुष्टयवान द्रव्य, पर लक्ष्य नहीं हो पाता है॥२॥

अतएव विकारी भाव रहित, निज सुख अनुभूति होती है।
फिर स्वयं तृप्त उस ज्ञानी के, इच्छा पिशाचनी भगती है॥३॥

तत्क्षण संवरमय भावों से, नवबंध पद्धति रुकती है।
झड़ते हैं स्वयं कर्म बंधन, शिवरमणी उसको वरती है॥४॥

६. मंगलमय है जिनवाणी...

मंगलमय है जिनवाणी, आनंदमय है जिनवाणी।
नित्य बोधिनी जिनवाणी, जग कल्याणी जिनवाणी ॥१॥

साँची माता जिनवाणी, संकट त्राता जिनवाणी।
सब सुख दाता जिनवाणी, मोक्ष प्रदाता जिनवाणी ॥२॥

मोह भगावे जिनवाणी, ज्ञान बतावे जिनवाणी।
काम नशावे जिनवाणी, वैराग्य जगावे जिनवाणी ॥३॥

निजानंद रस बरसानी, निज निधि निज में ही जानी।
कोई नहीं जिसकी सानी, सहज नमूँ माँ जिनवाणी ॥४॥

जयमाला

(दोहा)

पंचमेरु के जिन भवन, पूजत हो आनन्द।
गाऊँ जयमाला सुखद, नशें कर्म के फन्द॥

(पद्धरि)

जय पंचमेरु जग में महान, शाश्वत अकृत्रिम तीर्थ जान।
तीर्थंकर का जन्माभिषेक, इन्द्रादि करें उत्सव विशेष॥

जय प्रथम सुदर्शन मेरु सार, स्थित सु द्वीप जम्बू मंझार।
लख योजन उन्नत अति विशाल, शोभे भूपर वन भद्रशाल॥

ऊपर चढ़ पाँच शतक योजन, नंदन वन दीखे मनमोहन।
ऊँचा साढ़े बासठ सहस्र, योजन सोहे वन सोमनस॥

तहँ तैं छत्तीस सहस योजन, गिरशीस लसे शुभ पांडुक वन।
चारों दिशि के वन में सुन्दर, शोभें चैत्यालय श्री जिनवर॥

इक-इक में इकशत आठ लसे, जिनबिम्ब लखत दुर्मोह नशे।
ज्यों दर्पण में तनरूप लखे, त्यों आत्मस्वरूप प्रत्यक्ष दिखे॥

फिर विजय-अचल धातकीखण्ड, पूरव-पश्चिम दिशि अतिउतंग।
मंदर विद्युन्माली सु-नाम, पुष्कर में राजे अति ललाम॥

योजन चौरासी सहस उतंग, चारों मेरु सोहे अभंग।
तहँ सोलह-सोलह चैत्यालय, मनहर सुखकर श्रीजिन आलय॥

इन्द्रादिक सुर अरु विद्याधर, चारण ऋद्धिधारी मुनिवर।
प्रभु भाव वंदना करूँ सार, निज भाव माँहिं मैं भी निहार॥

पूजूँ वंदूँ आनन्दित हो, तासों विधि बंधन खंडित हो।
भोगों की चित में दाह नहीं, इन्द्रादिक पद की चाह नहीं॥

अकृत्रिम शुद्धातम साधूँ, अविनाशी शिवपद आराधूँ।
अपना पद अपने में पाऊँ, चरणों में बलिहारी जाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्य: जयमालाअर्घ्यं ।

(दोहा)

मंगलकर होवे सदा, जिनपूजा जग माँहिं।
अपनो भाव सुधारि के भवि निश्चय शिव पाँहिं।

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ॥

શ્રી સીમંધરજિન—આરતી

ધન્ય ધન્ય આજ ઘડી કૈસી સુખકાર હૈ,
સીમંધર દરબાર લગા સીમંધર દરબાર હૈ.

ખુશિયાં અપાર આજ હર દિલપે છાંઈ હૈં,
દર્શનકે હેતુ સબ જનતા અકુલાઈ હૈ, જનતા અકુલાઈ હૈં,
ચારોં ઓર દેખલો ભીડ બેસુમાર હૈ. સીમંધર૦ ૧

ભક્તિસે નૃત્ય—ગાન કોઈ હૈં કર રહે,
આતમ સુબોધ કર પાપોંસે ડર રહે, પાપોંસે ડર રહે;
પલ પલ પુણ્યકા ભરે ભંડાર હૈ. સીમંધર૦ ૨

જય જયકે નાદસે ગુંજા આકાશ હૈ,
છૂટેંગે પાપ સબ નિશ્ચય યે આશ હૈ, નિશ્ચય યે આશ હૈ;
દેખલો 'સૌભાગ્ય' ખુલા આજ મુક્તિદ્વાર હૈ. સીમંધર૦ ૩